४. प्रभात

– भारतभूषण अग्रवाल

फूटा प्रभात, फूटा विहान,
बह चले रश्मि के प्राण, विहग के गान, मधुर निर्झर के स्वर
झर–झर, झर–झर ।

प्राची का यह अरुणाभ क्षितिज,
मानो अंबर की सरसी में
फूला कोई रक्तिम गुलाब, रक्तिम सरसिज ।

धीर–धीरे,
लो, फैल चली आलोक रेख
धुल गया तिमिर, बह गई निशा;
चहुँ ओर देख,
धुल रही विभा, विमलाभ कांति ।
अब दिशा–दिशा
सस्मित, विस्मित,
खुल गए द्वार, हँस रही उषा ।

खुल गए द्वार, दृग, खुले कंठ,
खुल गए मुकुल ।
शतदल के शीतल कोषों से निकला मधुकर गुंजार लिए
खुल गए बंध, छवि के बंधन ।

जागो जगती के सुप्त बाल !
पलकों की पंखुरियाँ खोलो, मधुकर के अलस बंध
दृग भर
समेट तो लो यह श्री, यह कांति
बही आती दिगंत से,
यह छवि की सरिता अमंद
झर–झर, झर–झर ।

परिचय

जन्म : १९१९, मथुरा (उ.प्र.)

मृत्यु : १९७५

परिचय : भारतभूषण अग्रवाल छायावादोत्तर हिंदी कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं । आप अज्ञेय द्वारा संपादित 'तारसप्तक' के महत्त्वपूर्ण कवि हैं । आपने आकाशवाणी तथा अनेक साहित्यिक संस्थाओं में सेवा की है । आप साहित्य अकादमी के उपसचिव थे ।

प्रमुख कृतियाँ : 'छवि के बंधन', 'जागते रहो', 'ओ अप्रस्तुत मन', 'अनुपस्थित लोग', 'फूटा प्रभात', 'समाधि लेख' आदि ।

फूटा प्रभात, फूटा विहान,
छूटे दिनकर के शर ज्यों छवि के बह्नि बाण
केशर फूलों के प्रखर बाण
आलोकित जिनसे धरा
प्रस्फुटित पुष्पों के प्रज्वलित दीप,
लौ भरे सीप ।

फूटीं किरणें ज्यों बह्नि बाण, ज्यों ज्योति-शल्य,
तरुवन में जिनसे लगी आग ।
लहरों के गीले गाल, चमकते ज्यों प्रवाल,
अनुराग लाल ।

—— ० ——

पद्य संबंधी

प्रस्तुत नई कविता में भारतभूषण अग्रवाल ने सूर्योदय एवं प्रातःकाल का बड़ा ही मनोरम दृश्य उपस्थित किया है । दिनकर का आगमन होते ही फूल-पौधे, प्राणी-पक्षी वातावरण में होने वाले परिवर्तनों का कवि ने बहुत ही मनोरम वर्णन किया है । यहाँ रचना की चित्रात्मक शैली दर्शनीय है ।

कल्पना पल्लवन

'प्रत्येक सुबह नई आशाएँ लेकर आती है,' स्पष्ट करो ।

शब्द वाटिका

विहान = भोर, प्रातःकाल
अरुणाभ = लाल आभा से युक्त
क्षितिज = वह स्थान जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं
रक्तिम = लाल रंग का
सरसिज = कमल
विमलाभ = निर्मल
मुकुल = कली
अलस = आलसी, सुस्त
दिगंत = दिशा का अंत, क्षितिज
शल्य = वेदना
प्रवाल = नया एवं मुलायम पत्ता, कोंपल

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) कृति पूर्ण करो :

प्रभात में ये खुल गए
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]

(२) उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	उत्तर	आ
१. निर्झर	--------	रक्तिम
२. गुलाब	--------	दीप
३. दिशा	--------	पुष्प
४. प्रस्फुटित	--------	सस्मित
५. प्रज्वलित	--------	मधुर
		पंखुरियाँ

(३) कविता में इस अर्थ में प्रयुक्त शब्द लिखो:

१. पूर्व = ----------

२. कली = ----------

३. बाण = ----------

४. आँखें = ----------

(४) कविता में प्रयुक्त तुकांत शब्द लिखो ।

(५) कविता में आया हुआ प्रभात का वर्णन करो ।

(६) कविता की पंक्तियाँ पूर्ण करो :

शतदल के ----------

---------- ।

---------- !

---------- दृग भर

(७) निम्न शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द रिक्त स्थान में लिखो :

-------- क्षितिज, -------- गुलाब,

-------- कांति, -------- पुष्प,

-------- दीप, -------- गाल

-------- प्रवाल

(८) कविता से अपनी पसंद की किन्हीं चार पंक्तियों का भावार्थ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

असफलता सफलता की राह पर ले जाती है ।

MHB1M3

भाषा बिंदु

निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग/प्रत्यय लगाकर लिखो :

उपसर्ग युक्त शब्द

शाश्वत =		राग =	
संदेह =		स्मरण =	
जन्म =		रस =	
रिक्त =		देश =	

प्रत्यय युक्त शब्द

आलोक =		समझ =	
पत्थर =		दया =	
समय =		दूध =	
गरम =		प्यास =	

उपयोजित लेखन

रात और दिन के बीच का संवाद लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

प्रस्तुत कविता का आशय स्पष्ट करने वाला चित्र बनाओ तथा उसमें रंग भरो ।